8

जीवित विश्वास (2:14-2 6)

आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो कैलोरी-कॉशियंस हो? अमेरिका सचमुच में कैलोरी-कॉशियंस है! करियाने की दुकानों में खाने और पीने के ''लो कैलोरी'' वाले बड़े-बड़े सेक्शन होते हैं। सॉफ्ट ड्रिंक बनाने वाले बताते हैं कि डाइट ड्रिंकों की बिक्री कई सामान्य सॉफ्ट ड्रिंकों की बिक्री से बढ़कर होती है। परन्तु कैलोरी क्या है? तकनीकी तौर पर कहें तो कैलोरी भोजन में पाई जाने वाली ऊर्जा इकाई है। व्यावहारिक रूप में कहें तो कैलोरी खाने और पीने में पाया जाने वाला वह दुष्ट तत्व है, जो वज़न और मोटापा बढ़ाता है। पर क्या आपने कभी कैलोरी देखी है? बेशक नहीं, क्योंकि इसे नंगी आंखों से देखा नहीं जा सकता। *पर हममें से हर किसी ने कैलोरी का परिणाम देखा है!*

इस प्रकार, विश्वास की तुलना कैलोरी से की जा सकती है। विश्वास मसीही व्यक्ति और मसीही जीवन के लिए ''मुख्य'' शिक्षा है (इफिसियों 2:8, 9; 2 कुरिन्थियों 5:17; इब्रानियों 11:6; रोमियों 14:23)। याकूब के अनुसार हम विश्वास को देख नहीं सकते, पर विश्वास के परिणाम को आसानी से देखा जा सकता है। स्पष्टतया याकूब ने कई ऐसे लोगों के बारे में सुना था जो कहते थे कि उन्हें विश्वास है, परन्तु उनके विश्वास के परिणाम को देख पाना कठिन था। याकूब विश्वास और कामों के बीच सम्बन्ध को देखना चाहता है। विश्वास का प्रदर्शन आवश्यक है।

हमारे वचन पाठ याकूब 2:14-26 के उस अर्थ को समझने के लिए जो याकूब बताना चाहता था, खोलने से पहले एक टिप्पणी की जानी चाहिए। यह वह हवाला है जिसे आम तौर पर यह साबित करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है कि याकूब और पौलुस एक दूसरे के विरुद्ध थे। रोमियों 3:28 और गलातियों 2:16 जैसी आयतों का इस्तेमाल यह दिखाने के लिए किया जाता है कि पौलुस नहीं मानता था कि ''काम'' उद्धार के लिए आवश्यक है; जबकि याकूब 2:14-26 में याकूब बात करता है कि काम कितने आवश्यक हैं। उनके विरोधी प्रतीत होने वाली बात पर टिप्पणी करते हुए अलेग्जैंडर रॉस ने कहा है, ''वे तलवारें ताने एक दूसरे के सामने खड़े विरोधी नहीं हैं; वे तो सुसमाचार के विभिन्न शत्रुओं का सामना करते हुए एक दूसरे की ओर पीठ करे खड़े हैं।'' पौलुस ने यहूदी कानून दानों का सामना किया जो इस बात पर ज़ोर देते थे कि परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराए जाने के लिए कर्म आवश्यक हैं, जबकि याकूब ने उन लोगों का सामना किया जो यीशु के साथ सम्बन्ध होने का दावा करते थे पर दैनिक जीवन में उस सम्बन्ध के प्रभाव को कम करते थे। याकूब और पौलुस के बीच में अन्तर आरम्भ की बात पर है। पौलुस परमेश्वर की क्षमा के महान मुख्य तथ्य के साथ आरम्भ करता है, जिसे कोई मनुष्य कमाकर, जीतकर या हक्क से नहीं पा सकता। याकूब मसीही कहलाने की बात से आरम्भ करता है और इस बात पर ज़ोर देता है कि जब तक व्यक्ति अपने कामों के द्वारा अपने मसीही होने को साबित नहीं कर देता वह कदाचित मसीही नहीं है। इसलिए याकूब और पौलुस एक

दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि वे तो एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों का संदेश पूर्ण रूप में मसीही विश्वास के लिए आवश्यक है।

जब विश्वास विश्वास नहीं होता (2:14-17)

धर्म शास्त्र का यह भाग बड़े रूखे ढंग से एक प्रश्न के साथ आरम्भ होता है। याकूब मसीही कहलाने वालों को अपने कार्य पर विचार करवाना चाहता है। वह कहता है, ''हे मेरे भाइयो, यदि कोई कहे कि मुझे विश्वास है कि वह कर्म न करता हो, तो उससे क्या लाभ? क्या ऐसा विश्वास कभी उसका उद्धार कर सकता है?'' (2:14)। वह विश्वासियों को विश्वास को दिखाने के व्यक्तिगत मूल्य पर विचार करने की चुनौती देता है, जो कामों के रूप में दिखाई नहीं देता। स्पष्टतया याकूब ''कहता है'' शब्द पर ज़ोर दे रहा है। संसार समर्पित मसीही के सुन्दर अंगीकार से बड़ा गवाह नहीं है। परन्तु अपने विश्वास से बिना ''कर्मों'' के यह कितना सार्थक है? यदि विश्वास केवल बातें ही है, तो याकूब कहता है कि इसमें उद्धार दिलाने की सामर्थ नहीं है।

अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए याकूब एक उदाहरण देता है:

> यदि कोई भाई या बहिन नङ्गे उघाड़े हों, और उन्हें प्रति दिन भोजन की घटी हो। और तुममें से कोई उन से कहे, कुशल से जाओ, तुम गरम रहो और तृप्त रहो; पर जो वस्तुएं देह के लिए आवश्यक हैं वह उन्हें न दे, तो क्या लाभ? (2:15, 16)।

जो व्यक्ति सलामती की बातें करता है, पर भोजन या कपड़े का कोई प्रबन्ध नहीं करता, वास्तव में उसने कुछ नहीं किया। क्या हम कभी इसके दोषी हो सकते हैं? जब हम बीमारों, भूखों और बेघरों के लिए प्रार्थना करते हैं तो क्या हम उनकी सेवा के लिए कुछ करते हैं? क्या हम अपने विश्वास को बोलने पर उसे व्यवहार में न लाने के दोषी नहीं हैं? यदि हम अपने विश्वास को केवल एयर कंडीशन क्लासरूम में बैठकर ही व्यक्त करते हैं, तो क्या हम अपने विश्वास को केवल बताने पर उसे व्यवहार में न लाने के दोषी नहीं हैं?

इसी लिए याकूब कहता है, ''वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है'' (2:17)। कर्म ही वह ढंग है जिससे किसी का विश्वास वास्तविक या जीवित माना जा सकता है। इस बात पर ज़ोर देते हुए याकूब पूरी पुस्तक में पाए जाने वाले संदेशों में से एक *वास्तविक होने के लिए मसीहियत का व्यावहारिक होना आवश्यक है,* पर ज़ोर दे रहा है।

एक आपत्ति का उत्तर (2:18-20)

यहां पर याकूब एक काल्पनिक विरोधी के विचार को दिखाता है, जो उसके तर्क देने पर आपत्ति करता है। आपत्ति करने वाले का तर्क कुछ इस प्रकार होगा: ''हम सब अलग-अलग हैं और निश्चय ही आप इस तथ्य को मानेंगे। कुछ लोग दूसरों से अधिक प्रदर्शनकारी होते हैं। हम में से और लोग अधिक गम्भीर हैं। हो सकता है कि आप अपना विश्वास कर्म में अधिक इसलिए दिखा पाते हैं क्योंकि आप अधिक बहिर्मुखी हैं। दूसरी ओर हम में से दूसरे लोग अपने विश्वास को अपने तक ही रखते हैं, पर है यह भी विश्वास ही।'' याकूब इस तर्क का उत्तर यह कहकर देता कि पूरा तर्क ही गलत अवधारणा पर आधारित है। विश्वास और कर्मों को मसीही

लोगों के रूप में रहने के लिए हमारे जीवनों से अलग नहीं किया जा सकता। परमेश्वर ने उन दोनों को एक दूसरे के साथ जोड़ा है। इसलिए यह कुछ लोगों के विश्वास में बेहतर होने और अन्यों के कर्मों में बेहतर होने की बात नहीं है। विश्वास और कर्म साथ-साथ चलते हैं! आयत 18 में याकूब ''काम की बात'' पर आकर आपत्ति करने वाले के विश्वास को दिखाने की बात करता है। ऐसा वह इसलिए करता है क्योंकि उसे मालूम है कि विश्वास केवल उसी से दिखाया जा सकता है, जो यह करता है!

अन्त में याकूब अपनी बात के उदाहरण के रूप में सरल लिपि का इस्तेमाल करते हुए अपने आत्मसंतुष्ट आपत्ति करने वालों को चौंका देता है (2:19)। आपत्ति करने वाले क्या विश्वास करते हैं? वे एक परमेश्वर और यीशु के परमेश्वर होने में विश्वास रखते हैं। *तो क्या?* दुष्टात्मा भी तो विश्वास करते हैं! परमेश्वर जिस विश्वास की इच्छा और उम्मीद करता है वह केवल विश्वास करने और कांपने से बढ़कर है। हो सकता है कि किसी व्यक्ति के मन में रौश नी हो और यहां तक कि वह अपने दिल में कांपता भी हो तौभी हो सकता है कि वह सदा के लिए खो जाए। जो विश्वास परमेश्वर चाहता है, उसमें कुछ बढ़कर है, जिसे देखा और पहचाना जा सके यानी आज्ञाकारी, बदला हुआ जीवन।

इब्रानी इतिहास से प्रमाण (2:21-26)

अब उन प्रमाणों में पुराने नियम में अपने लोगों से परमेश्वर की उम्मीदों में याकूब 2:20 इस सामग्री का परिचय ऐसे कराता है, जैसे वह अभी भी अपने काल्पनिक विरोधी के साथ बहस कर रहा है। प्रमाण के दोनों सबूतों में, व्यक्ति परमेश्वर में अपने मज़बूत विश्वास से काम करने के लिए प्रेरित थे न कि स्वाभाविक मानवीय दयालुता की भावनाओं से।

21 से 24 आयतों में याकूब अब्राहम के जीवन का प्रमाण देता है। अब्राहम को ''यहूदी जाति का पिता'' और ''विश्वासियों का पिता'' भी माना जाता था। अब्राहम को परमेश्वर में भरोसा रखने, आज्ञा मानने, विश्वास में बढ़ने में संघर्ष करना पड़ा था। उसके जीवन के इन आरम्भिक संघर्षों पर विचार करें: अपनी बुलाहट का आधा आज्ञापालन करें, फलस्तीन में सूखे के दौरान मिस्र में भाग जाना, मिस्र में रहते हुए सारा के साथ अपने सम्बन्ध के बारे में झूठ बताना और परमेश्वर द्वारा उसकी पत्नी के संतान होने की बात कहने पर हंसना। अब्राहम विश्वास के इस नमूने में बढ़ा। किसी ने याकूब की बात की व्याख्या यह कहते हुए खूब की है: ''अब्राहम का उद्धार विश्वास के साथ कर्मों से नहीं, बल्कि उस विश्वास के साथ हुआ जो कर्म करता है।'' अब्राहम के विश्वास पर कोई संदेह नहीं है, क्योंकि उसने इसे अपने जीवन में दिखाया।

दूसरा सबूत जो याकूब देता है वह, वह विश्वास है जो रहाब के कामों में दिखाया गया था। क्या रहाब का ''मुर्दा'' विश्वास था। जो मात्र बौद्धिक अनुभव है, और उसने जासूसों के लिए कुछ नहीं किया? क्या उसे विश्वास था जिससे मन में रौशनी हुई और उसकी भावनाएं जगीं परन्तु अभी भी जासूसों के लिए कुछ नहीं किया। कहानी की सुन्दरता यह है कि रहाब का ''जीवित'' विश्वास था। वह जो विश्वास करती थी उसे उसने अपने काम के द्वारा दिखाया। उसने इस्राएलियों के यहोवा में विश्वास किया; उसने जासूसों को छिपाया और उन्हें दूसरे रास्ते से नगर के बाहर भेज दिया।

सारांश

याकूब यह कहते हुए अपनी चर्चा को समाप्त करता है, ''जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है वैसा ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है'' (2:26)। न्याय मण्डल के सामने वकील की तरह या श्रोताओं के सामने डिबेट करने वाले की तरह याकूब अपने तर्क को जो वह दे रहा था। संक्षिप्त करता है, जब देह और आत्मा अलग होते हैं तो मृत्यु और विनाश का कारण बनते हैं; वैसे ही जब विश्वास और कर्मों से उसके प्रदर्शन को अलग किया जाता है तो विश्वास मर जाता है और खराब हो जाता है।

मसीहियत के लिए वास्तविक होने के लिए, याकूब कहता है कि इसका *व्यावहारिक* होना और *व्यवहार में लाया जाना* आवश्यक है।